सं० ग्रो० वि०/एफ.डी. 54-87/8248 --- चूंकि हरियाणा के राज्यपान की राग है कि मै० एस. एस. मैटल फिनिसर, 1/13, डी. एल. एफ. मथुरा रोड, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री जितनेशवर मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक फ़रीदाबाद, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है :

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हितु निर्दिष्ट करना बीछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, तर्तः धारा 10 की उपधारा (1) के आएड (ग) छारा अदान की एड प्रितयों का अयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी सुधिसूचता सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० -11495-जी-अस 54/11245, दिनांक न करवे ही । 1958 हास उन्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, करीदाबाद को जिलाइमस्त आ इससे सुसंगत आ उसके सम्बन्धित लीचे जिला त्मामला न्यायिनग्य एवं पंचाट तोन मास में देने हैं तु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त अबन्धकों तथा अभिक्त की नीच था तो दिवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित सामला है :--

.क्या श्री जितनेशवर की सेवाओं का समापन न्यायोचित सदा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० थ्रो. वि./एफ. डी./63-87/8255.—चूंकि हस्तिणा के राज्यपति की राम है कि मै० अमरपाली हऊस फैशनज प्रा० लि०, प्लाट नं० 29, सैक्टर:27-सी, फ़रीदाबाद, के अमिती औहना देवी;धर्मपत्नी श्री राम बोध, ज्वाटर नं० एस-100, स्ववन्त एकता नगर, 13/6, मथुरा रोड, फ़रीदाबाद तथा (उसके अबन्धकों के क्षाट्य इसमें इसके बाद लिखित भामले में कोई औद्योगिक विदाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हुतु निर्दिष्ट करना वांक्रनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947 की धारा' 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिशिस्चना सं० 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिशिस्चना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिशिस्चना की धारा 7 के ग्रिशीन गठित श्रम न्यायालयं, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हितु-निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयची सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्रीमती सोहन। देवी की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत की हकदार है ?

सं श्रो. वि./एफ.डी./61-87/8262.— चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राये हैं कि मैं श्रमरपाली हाउस श्राफ फैशनज प्राठ लिठ, प्लाट नंठ 29, सैक्टर 27-सी, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमती शान्ति देवी धर्मपत्नी लाल बहादुर, क्वाटर नंठ एस-104, स्वतन्त्र एकता नगर, मथुर। रोड, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर वृक्तिःहरियाणा को राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेर्नु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रीविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवृसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, विनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उपत अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम त्यायालय, अरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन सास में देने हेंतु निर्दिश्य करते हैं जो कि उस्त प्रकृति विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्रीमती शान्ति देवी की सेवाओं का समापन न्यायायोचित तथा ठीक 'है ? यदि नहीं, 'तो वह किस राहत की हकदार है ?